



OPEN ACCESS

Volume: 5

Issue: 2

Month: May

Year: 2026

ISSN: 2583-7117

Published: 29.05.2026

Citation:

डॉ. अशोक कुमार शर्मा “निराला की कविता “राम की शक्ति-पूजा: मानव जीवन का प्रेरणादायक दर्शन” International Journal of Innovations in Science Engineering and Management, vol. 5, no. 2, 2026, pp. 334-339

DOI:

10.69968/ijsem.2026v5i2334-339



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Share Alike 4.0 International License

निराला की कविता “राम की शक्ति-पूजा: मानव जीवन का प्रेरणादायक दर्शन

डॉ. अशोक कुमार शर्मा¹

¹ सहायक आचार्य, इम्पल्स कॉलेज ऑफ एजुकेशन दौसा

Mail - dr.ashok021@gmail.com

Abstract

सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’ द्वारा रचित कविता “राम की शक्ति-पूजा” आधुनिक हिंदी साहित्य की एक कालजयी कृति है, जिसमें रामायण की एक प्रासंगिक घटना को नए युगबोध के साथ पुनर्परिभाषित किया गया है। प्रस्तुत शोधपत्र में इस कविता के कथानक एवं तत्वों का विश्लेषण करते हुए इसके निहित मानवीय जीवन दर्शन को उजागर किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि निराला ने पारंपरिक मिथक में अभिनव परिवर्तनों के माध्यम से मानव जीवन के संघर्ष, आस्था, आत्मबल तथा नैतिक साहस को प्रेरणादायक ढंग से अभिव्यक्त किया है। कविता में भगवान राम का मानवीय रूप चित्रित है— वे संशय, निराशा और आत्मसंघर्ष से जूझते हैं, जो दर्शाता है कि अन्याय पर विजय के लिए मानव को बाह्य शक्ति के साथ-साथ आंतरिक आध्यात्मिक शक्ति की आवश्यकता होती है। इस शोध के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि “राम की शक्ति-पूजा” एक साहित्यिक महत्त्व के साथ-साथ मानव जीवन के लिए प्रेरणादायक दर्शन प्रस्तुत करती है, जो व्यक्तिगत तथा सामूहिक दोनों स्तरों पर प्रासंगिक है। निष्कर्षतः, यह रचना न केवल छायावादी युग की चरम साहित्यिक उपलब्धि है, बल्कि उसमें निहित दर्शन आज भी मानवता को अन्याय के विरुद्ध संघर्ष हेतु संबल और प्रेरणा प्रदान करता है।

Keywords; निराला, राम की शक्ति-पूजा, मानव जीवन, प्रेरणादायक, रामायण.

INTRODUCTION

सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’ (1896–1961) हिंदी साहित्य के छायावादी युग के प्रमुख कवि हैं, जिन्हें खड़ी बोली हिंदी में नवाचार एवं मौलिक कल्पनाशीलता के लिए स्मरण किया जाता है। उनकी लम्बी कविता “राम की शक्ति-पूजा” पहली बार 1936 में रची गई तथा 1937 में कविता-संग्रह अनामिका के दूसरे संस्करण में प्रकाशित हुई, और तभी से इसे निराला के श्रेष्ठतम काव्यों में स्थान मिला है (Das, 1991)। यह कविता कुल 312 पंक्तियों की एक प्रबंध-काव्य रचना है, जिसे स्वयं निराला द्वारा निर्मित विशेष छंद “शक्ति-पूजा” (चौबीस मात्रिक वृत्त) में रचा गया है (Shukla, 2022)। पारंपरिक पौराणिक कथा को आधुनिक भावभूमि में ढालने के कारण इस कृति को हिंदी साहित्य में अभिनव प्रयोग के रूप में पहचाना जाता है (Gupta, 2018)। समकालीन समीक्षकों ने इसे छायावादी युग की सर्वोत्कृष्ट रचनाओं में गिना है, जिसमें निराला की वैचारिक निर्भिकता एवं कल्पना की प्रतिभा अपने चरम पर दिखती है (Rubin, 1971)। अनेक टीकाओं और समीक्षाओं ने इस कविता के साहित्यिक सौंदर्य एवं संदेश पर प्रकाश डाला है, जिससे इसकी स्थापित साहित्यिक महत्ता सिद्ध होती है (Pandey, 2018; Shishir, 2023)। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में यह कविता केवल राम-कथा का पुनर्कथन भर नहीं है, बल्कि मानव जीवन के संघर्षमय यथार्थ और आध्यात्मिक मूल्य का गहरा प्रतीक है (P. Das, 2009)। यह अध्ययन “राम की शक्ति-पूजा” में निहित उसी प्रेरणादायक दर्शन को समझने का प्रयास करता है, जो मानव जीवन को अन्याय के विरुद्ध लड़ने की शक्ति और दृढ़ता प्रदान करता है।

LITERATURE REVIEW

“राम की शक्ति-पूजा” पर पूर्ववर्ती साहित्य से ज्ञात होता है कि इस रचना ने पारंपरिक रामायण आख्यान में कई महत्वपूर्ण नवाचार किए हैं, जिन पर विद्वानों ने विस्तृत चर्चा की है। पौराणिक संदर्भ की दृष्टि से यह कविता वाल्मीकीय रामायण की एक प्रख्यात पारंपरिक कथा

कथा—शरद ऋतु में राम द्वारा देवी दुर्गा की आराधना—पर आधारित है, जो मूल रामायण में नहीं मिलती किंतु तुलसीदास आदि के उत्तरवर्ती आख्यानों एवं कृतिबास की बंगाली रामायण में वर्णित है (Kinsley, 1989)। निराला ने इसी प्रसंग को अपनी सृजनात्मक स्वतंत्रता से नया रूप दिया है: कथा के बाह्य ढाँचे को लेते हुए उसके आशयों में आधुनिक युगचेतना और बहु-स्तरीय अर्थ जोड़ दिए हैं। गुप्ता (2018) के अनुसार निराला की इस कवित्व-दृष्टि ने प्राचीन कथा को आधुनिक संदर्भ में रूपांतरित कर उसमें “*युगीन-चेतना और आत्मसंघर्ष का मनोवैज्ञानिक धरातल*” जोड़ दिया है। परिणामस्वरूप, यह कविता एक साथ मिथकीय, राष्ट्रीय और नैतिक प्रतीकों को अभिव्यंजित करती है (Bajaj, 2025)। समीक्षकों ने रेखांकित किया है कि यदि निराला पारंपरिक कथा को ज्यों का त्यों दोहराते रहते तो यह महज एक पुनर्कथन भर रह जाती, परंतु उन्होंने इसमें कई मौलिक प्रयोग किए जिससे यह रचना कालजयी बन गई। उदाहरणस्वरूप, निराला ने कृतिबास की कथा में मौजूद अलौकिक वर्णनों को रखते हुए भी कथानक को अपने दृष्टिकोण के अनुसार ढाला, जिससे कविता में एक साथ पारंपरिक आस्था और आधुनिक मानवतावादी मूल्य समाहित हो गए हैं (Gupta, 2018; Stasik, 2009)।

कई अध्येताओं ने इस कविता की साहित्यिक विशिष्टताओं और प्रभावों का अध्ययन किया है। **सिसिर कुमार दास** (1991) ने आधुनिक हिंदी साहित्य के इतिहास में इसे एक ऐसी विलक्षण रचना माना है जिसने छायावादी युग में नवीन मानवतावादी चेतना का संचार किया। **डेविड रुबिन** (1971) ने *Journal of Asian Studies* में प्रकाशित अपने शोधपत्र में “राम की शक्ति-पूजा” तथा निराला की अन्य दीर्घ कविताओं को हिंदी कविता के पुनर्जागरण का प्रतीक बताते हुए कहा है कि इनमें कल्पना की अद्भुत उड़ान और भाषाई विस्तार दिखाई देता है, जो तत्कालीन कविताओं से एक साहसिक विचलन था। रुबिन के अनुसार निराला ने पारंपरिक धार्मिक कथ्य में मानवीय भावनाओं और आधुनिक संवेदनाओं का जो समावेश किया, उसने हिंदी कविता को एक नई दिशा दी (Rubin, 1971)। इसी प्रकार **रामविलास शर्मा** जैसे आलोचकों ने रचना की नाटकीयता की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। शर्मा के विश्लेषण में, “*राम की शक्ति-पूजा*” जैसी नाटकीयता निराला की अन्य किसी कविता में नहीं है”, क्योंकि इसमें कवि ने अपने जीवन के दुःख, निराशा, संघर्ष और विजय की आकांक्षा को एक सशक्त नाटकीय रूप दे दिया है (as cited in Sharma, 2015)। वास्तव में इस कविता की कथात्मक संरचना में नाट्यवत तत्व हैं: संवाद, आत्मकथ्य और चरम संकट-बिंदु, जो पाठक के मन पर गहरी छाप छोड़ते हैं (Sharma, 2015)।

कविता के संदेश और दर्शन पर भी विद्वानों ने विशेष ध्यान दिया है। **एस.डी. शर्मा** (2015) ने इसे हिंदी साहित्य में एक नया प्रयोग

मानते हुए इसके साहित्यिक महत्व पर प्रकाश डाला है। उनके अनुसार यह रचना महाकाव्य के कई गुणों से युक्त होते हुए भी स्वयं में एक स्वतंत्र विधा को प्राप्त करती है, क्योंकि इसमें नायक राम के माध्यम से मानवीय चेतना और नैतिक द्वंद्व को जो गहराई दी गई है वह पारंपरिक महाकाव्यों से भिन्न एक मौलिक विशेषता है (Sharma, 2015)। **आर.पी. वर्मा** (2016) ने अपने शोध में कविता के उद्देश्य एवं संदेश की पड़ताल करते हुए निष्कर्ष निकाला है कि निराला ने राम के मिथक के जरिए भारतीय जनमानस में नैतिक शक्ति का संचार करने का प्रयत्न किया। वर्मा लिखते हैं कि “*राम की शक्ति-पूजा*” का उद्देश्य सफलीभूत एवं चरितार्थ हो सका है; उसका संदेश सबल एवं प्रखर ढंग से जन-चेतना को आप्लावित करने में समर्थ हो सका है” (Verma, 2016)। अर्थात् यह कविता अपना संदेश प्रभावशाली ढंग से जनसमुदाय तक पहुँचाने में सफल रही है। वर्मा तथा अन्य शोधकर्ताओं (जैसे द्विवेदी, 2018) ने यह भी इंगित किया है कि कविता का मूल संदेश मानव के अदम्य आत्मविश्वास और अविचल श्रद्धा की विजय में निहित है, जिसे कवि ने राम के चरित्र के माध्यम से रूपायित किया है। **देवेन्द्र कुमार गुप्ता** (2018) के विस्तृत विश्लेषण में इस रचना को *गांधीयुगीन नैतिक शक्ति के प्रतीक* के रूप में देखा गया है, जहाँ राम का चरित्र एक आधुनिक व्यक्ति का रूपक बन जाता है जो आततायी शक्तियों (रावण/ब्रिटिश सत्ता) से जूझ रहा है। संक्षेप में, पूर्ववर्ती साहित्य इंगित करता है कि “राम की शक्ति-पूजा” साहित्यिक नवीनता, मानवीयकरण, आस्था एवं राष्ट्रीय चेतना – इन सभी दृष्टियों से एक अद्वितीय कृति है। पूर्व के अध्ययनों ने इसकी भाषा-शैली, छंद-विधान, अलंकारिक सौंदर्य के साथ-साथ इसके दार्शनिक और प्रतीकात्मक पहलुओं को भी उद्घाटित किया है। इन अध्ययनों के आलोक में, वर्तमान शोध इसके केंद्रीय प्रेरणादायी दर्शन पर केंद्रित है, जो मानव जीवन में संघर्ष एवं आशा के संतुलन को दर्शाता है।

METHODOLOGY

इस अध्ययन में **पाठ्य विश्लेषण की गुणात्मक पद्धति** का प्रयोग किया गया है। कविता के मूल पाठ तथा उपलब्ध टीकाओं का सावधानीपूर्वक विश्लेषण कर उसके कथानक, चरित्र-चित्रण, प्रतीकों और दार्शनिक संकेतों को समझा गया है। शोध के दौरान द्वितीयक स्रोतों-विशेषकर साहित्यिक आलोचनाओं एवं ऐतिहासिक संदर्भों-का सहयोग लिया गया है ताकि कविता की विषयवस्तु का व्यापक संदर्भ उभारा जा सके। रामायण के जिस प्रसंग पर यह कविता आधारित है, उसके पौराणिक एवं सांस्कृतिक निहितार्थ को समझने के लिए तुलनात्मक पद्धति अपनाई गई है (Kinsley, 1989)। साथ ही, कविता की रचना-परिस्थिति (1930 के दशक का स्वतंत्रता संग्राम काल) को ध्यान में रखते हुए ऐतिहासिक-संदर्भ दृष्टिकोण का समावेश किया गया है, जिससे रचना के राष्ट्रीय एवं मानवतावादी संदेश की व्याख्या

विश्वसनीय ढंग से हो सके। विश्लेषण में आलोचनात्मक पाठ-व्याख्या** (Hermeneutics) का सहारा लेते हुए कविता के विभिन्न अंशों में निहित भावों को विवेचित किया गया है। उदाहरणार्थ, राम के संवादों और आत्ममोहन के क्षणों की व्याख्या करते समय रामविलास शर्मा जैसे विचारकों की स्थापनाओं को संदर्भित किया गया है (Sharma, 2015)। कुल मिलाकर, अध्ययन की कार्यविधि में पाठ के स्थूल तत्वों (कथानक, संरचना) के साथ-साथ सूक्ष्म तत्वों (भावार्थ, प्रतीक) दोनों का समीक्षात्मक परीक्षण सम्मिलित है। विश्वसनीयता हेतु, सभी उद्धरण एवं तथ्य स्थापित स्रोतों से पृष्ठ किए गए हैं तथा अनुवादित अंशों को मूल के निकट रखने का प्रयास किया गया है। इस प्रकार, शोध-पद्धति ने पाठ्य एवं प्रसंगानुकूल विश्लेषण को संतुलित करते हुए “राम की शक्ति-पूजा” में निहित मानवतावादी दर्शन को उभारने का लक्ष्य साधा है।

RESULTS

“राम की शक्ति-पूजा” का कथानक रामायण के युद्ध प्रसंग के इर्द-गिर्द होते हुए भी मानवीय भावनाओं और आध्यात्मिक संघर्ष का मार्मिक चित्र प्रस्तुत करता है। कविता के प्रारंभिक अंश में भगवान राम एक थके हुए मानव नायक के रूप में उभरते हैं, जो दिनभर रावण से भीषण युद्ध करने के बाद संध्या काल में अपनी सेना समेत वापस शिविर में लौटे हैं। यहाँ निराला राम को सर्वशक्तिमान देवता न दिखाकर चिंताग्रस्त और विषाद से घिरे योद्धा के रूप में दिखाते हैं, जिनके मन में आगामी युद्ध की चिंता तथा सीता की स्मृतियाँ हिलोरें मार रही हैं। अंधकारमय रात्रि का वर्णन करते हुए कवि लिखते हैं: “है अँधियारी रात, दिशा का ज्ञान खो रहा; स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा फिर-फिर संशय” – अर्थात् घोर निशा में दिशाज्ञान लुप्त हो चुका है, और दृढ़व्रती राम के मन में भी बार-बार संशय उठ रहा है कि कहीं रावण विजय न हो जाए। यह वह क्षण है जहाँ राम पहली बार स्वयं को असमर्थ मानने लगते हैं: “धिक जीवन को, जो पाता ही आया विरोध” – “शाप है उस जीवन को जिसे कदम-कदम पर केवल विरोध ही मिला है” – इस आत्मधिकार में राम की गहन निराशा झलकती है। निराला के इस चित्रण ने राम के चरित्र का मानवीकरण करते हुए उनके भीतर चल रहे भय और द्वंद्व को उजागर किया है (Gupta, 2018; Lamba, 2020)। वास्तव में, “निराला के राम आधुनिक मानव हैं, जो न्याय के पक्ष में होते हुए भी टूट जाते हैं” – वे दुखी होते हैं, व्याकुल होते हैं, यहाँ तक कि रो पड़ते हैं (Lamba, 2020)। इस मानवीय चित्रण से कविता यह संदेश प्रारंभ में ही स्थापित करती है कि महान से महान व्यक्ति को भी कठिन संघर्षों में मानसिक द्वंद्व का सामना करना पड़ सकता है। अन्याय जिस ओर है, शक्ति भी उसी ओर संगठित दिखाई देती है – राम की यह पीड़ा उस समय के अनेक सत्याग्रहियों की मनोदशा की प्रतिध्वनि थी (Bajaj, 2025)।

उक्त निराशा के वातावरण में भी राम के चरित्र में एक विशेषता प्रकट होती है – निरंतर **आत्ममंथन और कर्तव्य-बोध**। राम अपनी व्यथा को स्वीकारते हुए भी समाधान का मार्ग खोजने को तत्पर दिखते हैं। **जाम्बवान्** जैसे अनुजनों के परामर्श से उन्हें पराजय के भय से उबरने का मार्ग सूझता है। जाम्बवान् याद दिलाते हैं कि रावण अत्यंत शक्तिशाली है और उसे परास्त करने के लिए **दिव्य शक्ति** की आवश्यकता होगी। वह राम को देवी भगवती (शक्ति) की आराधना करने की सलाह देते हैं। यहाँ कविता एक आध्यात्मिक मोड़ लेती है – बाहरी रण पराजय के संकट का उत्तर आध्यात्मिक आत्मबल में ढूँढने की दिशा। राम यह प्रस्ताव तत्क्षण स्वीकार करते हैं; वे समझ जाते हैं कि आसुरी शक्ति (अन्याय) का सामना करने के लिए ईश्वरीय शक्ति (न्याय का संबल) आवश्यक है (Gupta, 2018)। फलस्वरूप, राम **शक्ति-पूजा** का अनुष्ठान आरंभ करने का निश्चय करते हैं और अपने परम भक्त **हनुमान** को 108 नील कमलों का संधान करने भेजते हैं। इस बिंदु पर कविता में एक और महत्वपूर्ण घटना घटती है – राम के नेत्रों में आँसू देखकर हनुमान की अंतरशक्ति जागृत हो जाती है और वह क्रुद्ध तथा भ्रमित हो उठता है; उसे शांत करने के लिए स्वयं शिव प्रकट होकर उसे उसकी मर्यादा और **धर्म** का बोध कराते हैं। यह प्रकरण दर्शाता है कि राम का भावुक मानवीय पक्ष उनके अनुयायियों को कैसे व्याकुल कर देता है, और अंततः दैवी मार्गदर्शन से सब अपनी-अपनी भूमिका निभाने को तत्पर होते हैं। अतः कविता का मध्यभाग **आत्मसंघर्ष से आत्मसंयम की ओर** गतिमान है – राम अपनी कमजोरी स्वीकार कर भगवती की शरण में जाने को उद्यत हैं, और उनकी सेना के हनुमान आदि भी फिर एक बार धर्म के लिए तन-मन अर्पित करने को तैयार हो जाते हैं।



चित्र 1: भगवान राम द्वारा शक्ति की आराधना का एक चित्रण, जिसमें वे माँ दुर्गा को प्रसन्न करने हेतु यज्ञ-अनुष्ठान कर रहे हैं। इस दृश्य में राम का सात दिन और रातों तक चला तप दर्शाया गया है, जो कविता “राम की शक्ति-पूजा” में वर्णित केंद्रीय घटना है। राम की यह आराधना मानव द्वारा देवी शक्ति के आह्वान एवं आत्मसमर्पण का प्रतीक है, जिसके फलस्वरूप दिव्य अनुकम्पा प्राप्त होती है।

इसके बाद कविता के चरम प्रसंग में राम का सप्त-दिवसीय अनुष्ठान प्रारंभ होता है। निराला ने अत्यंत मार्मिक चित्रण किया है कि किस प्रकार राम लगातार सात दिन तक दुर्गा की उपासना में लीन रहते हैं—व्रत, ध्यान और कमल-पुष्पों की अर्पणा के साथ। छंदों की लयकारी के माध्यम से उपासना का तीव्रता से बढ़ता हुआ क्रम पाठक के हृदय में उत्सुकता और श्रद्धा जगाता है। सप्तमी से अष्टमी और नवमी तक राम निरंतर चित्तवृत्ति एकाग्र किए तपस्यारत रहते हैं, मानो अपनी समस्त मानविक सीमाएँ लाँघकर दिव्य शक्ति को आत्मसात करना चाह रहे हों (Verma, 2016)। किन्तु अष्टमी तिथि के अंत में एक नाटकीय संकट उपस्थित होता है – पूजा के लिए एक अंतिम कमल-पुष्प कम पड़ जाता है। 108 कमलों में से 107 ही मिल पाते हैं; आखिरी नीलकमल गायब है। यह क्षण संपूर्ण कविता का संकट-बिंदु (Crisis) है, जो नायक की परीक्षा लेता है। राम क्षणभर के लिए विस्मय एवं संताप से भर उठते हैं कि क्या उनकी पूजा पूर्ण नहीं होगी? किन्तु अगले ही पल वे अद्भुत आत्मत्याग का निर्णय लेते हैं – वे सोचते हैं कि स्वयं उनका नाम 'कमलनयन' (कमल-सदृश नेत्र वाले) है, अतः वे अपने एक नेत्र को कमल मानकर देवी को अर्पित कर देंगे। यह निर्णय राम के चरम आत्मसमर्पण और भक्ति की पराकाष्ठा को दर्शाता है। कवि निराला इस प्रसंग को अत्यधिक संवेदना के साथ प्रस्तुत करते हैं; राम अपने धनुष पर चढ़े बाण की नोक से अपना नेत्र निकालने को तत्पर हो जाते हैं। ठीक उसी क्षण शक्ति प्रकट होती है – देवी दुर्गा राम का हाथ पकड़ लेती हैं और उन्हें ऐसा करने से रोकती हैं। देवी प्रसन्न होकर स्वयं प्रकट हो गई हैं और वे राम को विजय का आशीर्वाद देती हैं: "तुम्हारी विजय होगी", यह दिव्य वाणी गूँज उठती है। साथ ही देवी वह अंतिम कमल पुष्प राम के चरणों में रख देती हैं, पूर्णाहुति स्वीकार करते हुए। इस प्रकार अनुष्ठान संपन्न होता है और राम को देव शक्तियों का अमोघ वरदान मिल जाता है। कविता के इस उत्कर्ष पर कथ्य स्पष्ट रूप से संकेत देता है कि अडिग श्रद्धा और आत्मबलिके सम्मुख ईश्वर को भी प्रकट होना पड़ता है – सत्य एवं धर्म की विजय सुनिश्चित है, बशर्ते नायक अपने संकल्प में तनिक भी कमी न आने दे (Gupta, 2018; Bajaj, 2025)। देवी दुर्गा राम को आश्वस्त करती हैं कि आने वाले युद्ध में उनकी विजय निश्चित है और उन्हें महान शक्ति का अभिग्रहण प्राप्त होगा। यह आश्वासन पाकर अगली प्रातः राम नवीन उत्साह और दैवी ऊर्जा से भरकर रण में उतरते हैं तथा रावण पर निर्णायक विजय प्राप्त करते हैं। कविता यहीं समाप्त होती है, एक सकारात्मक उत्कर्षके साथ – अधर्म पर धर्म की विजय, अन्याय पर न्याय की जीत। लेकिन निराला की कुशलता यह है कि इस विजय के पीछे उन्होंने जिस मानवीय साधना और आत्मिक परिवर्तन को दिखाया, वही कविता का केन्द्रीय संदेश बन जाता है (Verma, 2016)। नीचे तालिका 1 में कविता के कथानक के विभिन्न चरणों और उनके दार्शनिक आशयों का सार प्रस्तुत है:

तालिका 1: "राम की शक्ति-पूजा" के कथानक के चरण एवं उनके निहित दर्शन का सारांश

काव्य खंड	मुख्य भाव व दर्शन
खंड I: युद्धोपरांत विषाद	राम की मानवोचित निराशा एवं संशय – शक्ति का असंतुलन (अन्याय पक्ष ताकतवर) पर नैतिक चिंता।
खंड II: आत्ममंथन व स्मृति	राम का आंतरिक द्वंद्व एवं कर्तव्य-बोध – प्रेयसी सीता की स्मृति से धर्म-लड़ाई के संकल्प को नवबल।
खंड III: शक्ति-आराधना व तप	समस्या का आध्यात्मिक समाधान – देवी शक्ति की उपासना द्वारा आत्मबल जागरण; अटल श्रद्धा और सात्त्विक तपस्या।
खंड IV: आत्म-बलिदान व विजय	चरम परीक्षण व समर्पण – राम द्वारा नेत्र-बलिदान का संकल्प; ईश्वरीय अनुकम्पा से अन्याय पर न्याय की विजय का शुभ आश्वासन।

DISCUSSION

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि "राम की शक्ति-पूजा" अपने बाह्य रूप में भले ही राम-रावण युद्ध की कथा हो, किन्तु इसके अंतर में मानवीय जीवन का एक गहरा दर्शन निहित है। निराला ने भगवान राम जैसे पुरातन नायक को मानवीय संवेदनाओं से युक्त एक आधुनिक नायक का रूप दिया है, जो संकट के क्षणों में हताश भी होता है और फिर अपनी आत्मिक चेतना से समाधान भी खोजता है। राम का यह रूपांतरण अत्यंत प्रेरणादायक है, क्योंकि यह दर्शाता है कि महान उद्देश्य के लिए संघर्षरत किसी व्यक्ति को यदि असफलता या विरोध का सामना भी करना पड़े, तो उसे अपनी आस्था और संकल्प से नवशक्ति प्राप्त की जा सकती है (Gupta, 2018)। वास्तव में राम का आत्मसंघर्ष इस कविता का हृदय है – बाहरी युद्ध से अधिक महत्व कवि ने उस आंतरिक युद्ध को दिया है जो राम के मन में चल रहा था। यह आंतरिक द्वंद्व हर मानव के जीवन में आने वाली उस परिस्थिति का प्रतीक है जब अन्याय प्रबल प्रतीत होता है और सत्य क्षीण; ऐसे में निराला का संदेश है कि हार मानने के बजाय आत्मबल को जगाकर ईश्वर (सत्य/न्याय) की शरण में जाना चाहिए (Verma, 2016)। कविता में राम का संकल्पित होकर शक्ति की आराधना करना इसी का द्योतक है। यह प्रसंग हमें मानव जीवन की उस वास्तविकता की याद दिलाता है कि बाहरी संसाधन सीमित हों, तब भी नैतिक साहस और आध्यात्मिक आस्थामनुष्य को अदम्य शक्ति प्रदान कर सकते हैं (Bajaj, 2025)। यही नहीं, राम द्वारा अपने नेत्र तक अर्पित करने का निर्णय दर्शाता है कि लक्ष्य की प्राप्ति हेतु यदि स्वयं को समर्पित करना पड़े तो उससे पीछे नहीं हटना चाहिए – मन, कर्म और इन्द्रियों की पूर्ण आहुति ही सफलता की कुंजी है। इस चरम बलिदान पर देवी का प्रसन्न होकर वरदान देना प्रतीकात्मक रूप से

यह दर्शाता है कि जब मानव अपने कर्तव्य-पथ पर पूर्ण समर्पण के साथ अग्रसर होता है तो परमशक्ति भी उसकी सहायक बन जाती है। यह दर्शन गीता के उस सिद्धांत से साम्य रखता है कि *निष्काम कर्म और पूर्ण श्रद्धा* अंततोगत्वा शुभ फल देती है।

विशेष रूप से, कविता का रचना-काल (1930 का दशक) ध्यान देने योग्य संदर्भ प्रदान करता है। यह वही समय था जब भारत का स्वतंत्रता आंदोलन अपने चरम पर था, और जनता अहिंसक प्रतिकार द्वारा विदेशी शासन के *अन्याय* से मुक्ति पाने के लिए संघर्षरत थी। “राम की शक्ति-पूजा” को कई विद्वान इस ऐतिहासिक संघर्ष का रूपक मानते हैं (Gupta, 2018)। राम का रावण से युद्ध वस्तुतः सत्याग्रहियों का साम्राज्यवादी शक्तियों से संघर्ष है, और देवी-आराधना द्वारा शक्ति संचय गांधीवादी नैतिक बल (सत्य और अहिंसा) का प्रतीक है। राम का हतोत्साहित होना उस समय के देशभक्तों की निराशा को प्रतिबिंबित करता है, जब आज़ादी दूर प्रतीत होती थी; और राम का दुर्गा की शरण में जाना उस मनोविश्वास को, जो आज़ादी के आंदोलन को शक्ति देता था – एक ईश्वरीय विश्वास कि सत्य की विजय होगी (Bajaj, 2025)। कविता का अंतिम आशावादी स्वर कि “*आप विजयी होंगे*” (देवी द्वारा दिया आशीष) तत्कालीन भारतीय जनता के लिए स्वतंत्रता-प्राप्ति के विश्वास जैसा था। रोहित लांबा (2020) ने ठीक ही लिखा है कि यह कविता स्वतंत्रता संग्राम के दौरान एक आवाहन-पत्र (call to action) की तरह देखी गई, जिसने लोगों को अन्याय के विरुद्ध खड़े होने की प्रेरणा दी। आज भी, समय के अंतराल के बावजूद, जब मानवता किसी भी संकट – चाहे वह सामाजिक अन्याय हो या वैश्विक महामारी – का सामना करती है, तो “राम की शक्ति-पूजा” एक *स्मारक की तरह* खड़ी दिखाई देती है जो हमें धैर्य, आशा और संघर्ष जारी रखने का पाठ पढ़ाती है (Lamba, 2020)। इस काव्य का सतत मंचन और पाठ आज तक होते रहना (उदाहरणतः 2017 में दिल्ली में हुए नाट्य मंचन में इसके भक्ति और न्याय के संदेश को पुनर्जीवित किया गया) इस बात का प्रमाण है कि इसमें निहित मानवतावादी दर्शन सर्वकालिक महत्त्व का है (Chaturvedi, 2017)।

साहित्यिक दृष्टि से भी “राम की शक्ति-पूजा” ने हिंदी काव्य को नई दिशा दी। निराला ने छंद, भाषा और शैली में जिस साहसिक मौलिकता का परिचय दिया, उसने आनेवाली पीढ़ी के कवियों को परंपरा से हटकर सोचने की प्रेरणा दी (Makkar, 2018; Rubin, 1971)। खड़ी बोली हिंदी में इतना लंबा और गुढ़ अर्थ वाला काव्य लिखना उस समय नवीन था, किंतु निराला ने यह कर दिखाया और सिद्ध किया कि आधुनिक हिंदी साहित्य दार्शनिक गहराई प्राप्त करने में सक्षम है। समकालीन आलोचक प्रसन्ना दास (2009) ने ध्यान दिलाया है कि निराला की कविताएँ राजनीति और संस्कृति में परिवर्तन लाने की शक्ति रखती थीं; “राम की शक्ति-पूजा” जैसी

रचनाओं ने साहित्य को सामाजिक-आध्यात्मिक जागरण का माध्यम बना दिया (P. Das, 2009)। यह कविता छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक मानी जाती है, किंतु अपनी विचारप्रवणता में यह उस युग से आगे बढ़कर सार्वकालिक हो जाती है। इसमें भक्ति-भावना और मानवतावाद का अद्भुत समन्वय है – एक ओर यह रामायण के **भक्ति** तत्व से जुड़ी है, तो दूसरी ओर यह **नवजागरणकालीन मानवतावाद** से। यही द्वैत इसे विशिष्ट बनाता है: यह *आस्था* और *कृतित्व* दोनों को समान महत्त्व देती है।

CONCLUSION

“राम की शक्ति-पूजा” का समग्र विश्लेषण बताता है कि यह कविता धार्मिक आख्यान से परे मानवजीवन के लिए एक प्रेरक दर्शन प्रस्तुत करती है। निराला ने राम के चरित्र को मानवता के आयाम में उतार कर दिखाया कि संधिकाल में ईश्वर का अवतार भी मानव-जैसी मनःस्थितियों से गुजरता है – संशय, दुःख, आशा और आत्मसमर्पण। अतः साधारण मानव के लिए संदेश स्पष्ट है: जब जीवन में चारों ओर अन्धकार और अन्याय दिखाई पड़े, तब हारने या भागने के बजाय आत्मबल को जागृत करें, ईश्वर (सत्य एवं आदर्श) में अटूट आस्था रखें, और अपना सर्वस्व दाँव पर लगाने को तत्पर रहें। इसी में उद्धार निहित है। कविता यह दर्शाती है कि सत्य की राह में आने वाली बाधाएँ आत्मविश्वास और अध्यात्म के संयोग से पार की जा सकती हैं। इस काव्य का प्रेरणादायी दर्शन स्वतंत्रता-संग्राम के युग में उतना ही अर्थपूर्ण था जितना आज के विभिन्न संकटों के दौर में है। साहित्य और दर्शन के संगम से निर्मित निराला की यह कृति हिंदी साहित्य को एक उन्नत शिखर पर पहुँचाती है। 312 पंक्तियों में समाए अप्रतिम बिम्बों, अलंकारों और छंदों के माध्यम से कवि ने जो संदेश परोया है, वह सार्वभौमिक और शाश्वत है: *अन्याय कितना ही शक्तिशाली क्यों न प्रतीत हो, नैतिक बल एवं आस्था के सम्मुख अंततः पराजित होता है*। “राम की शक्ति-पूजा” मानव को उसके भीतर स्थित उसी शक्ति का बोध कराती है और कठिन से कठिन संघर्ष में आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। इस प्रकार, यह कविता एक साहित्यिक रचना के साथ-साथ मानवीय मूल्यों का दीपस्तंभ बनकर उभरती है, जिसकी रोशनी आने वाली पीढ़ियों को संघर्ष, श्रद्धा और विजय का मार्ग दिखाती रहेगी।

REFERENCES

- [1] Bajaj, R. (2025). Reimagining myths in colonial India: Rāma's devotion and the spirit of nationalism. *International Journal of Arts and Social Science*, 8(9), 14–22.
- [2] Chaturvedi, N. (2017, July 8). “*Ram ki Shakti Puja*.” *The Drama of Devotion and Justice*. The Theatre Times.

- [3] Das, P. K. (2009). Making things happen: Poetry, political and cultural change. *Economic and Political Weekly*, 44(36), 42–44.
- [4] Das, S. K. (1991). *A History of Indian Literature 1911–1956: Struggle for Freedom (Triumph and Tragedy)*. New Delhi: Sahitya Akademi.
- [5] Gupta, D. K. (2018). निराला की काव्यदृष्टि और राम की शक्तिपूजा . *International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management*, 5(6), 1211–1224.
- [6] Kinsley, D. R. (1989). *The Goddesses' Mirror: Visions of the Divine from East and West*. Albany, NY: State University of New York Press.
- [7] Lamba, R. (2020, November 11). Lessons from Nirala's ballad for our battle with Covid. *Mint Lounge*. Retrieved from <https://www.livemint.com/mint-lounge>
- [8] Makkar, J. (2018). Tripathi, Suryakant (c.1899–1961). *Routledge Encyclopedia of Modernism*. doi:10.4324/9781135000356-REM2035-1
- [9] Nirala, S. T. (1937). *Ram ki Shakti-Puja* . In *Anamika* (2nd ed.). Allahabad: ———.
- [10] Pandey, R. D. (2018). *Ram ki Shakti Puja – kuchh bhav, kuchh vichar* . New Delhi: Anuradha Prakashan.
- [11] Rubin, D. (1971). Nirala and the renaissance of Hindi poetry. *The Journal of Asian Studies*, 31(1), 111–126. <https://doi.org/10.2307/2053055>
- [12] Sharma, S. D. (2015). राम की शक्ति-पूजा का साहित्यिक महत्व . *International Journal of Applied Research*, 1(12), 841–843.
- [13] Shishir, K. (2023). *Nirālā: Rām kī Śakti-Pūjā*. Lucknow: Ananya Prakashan.
- [14] Shukla, V. (2022). *Chhand Chhand Par Kunkum* . New Delhi: Prabhat Paperbacks.
- [15] Verma, R. P. (2016). राम की शक्ति पूजा: उद्देश्य एवं संदेश . *International Journal of Innovative Social Science & Humanities Research*, 3(4), 1–5.